प्रयोगों में खरगोश की पीड़ा

जंतुओं के साथ काम करने वाले शोधकर्ताओं के लिए वैज्ञानिक रूप से यह जानना बहुत मुश्किल होता है कि क्या उनके प्रायोगिक जंतु को दर्द हो रहा है। इसके लिए पारंपरिक रूप से कुछ तरीकों का इस्तेमाल होता आया है। जैसे प्रयोग पूरा होने के बाद यह देखा जाता है कि क्या उस जंतु का वज़न कम हुआ है या क्या उसके भोजन-पानी की खपत में कोई कमी आई है या क्या उसके चलने-फिरने में कोई अंतर नज़र आ रहा है।

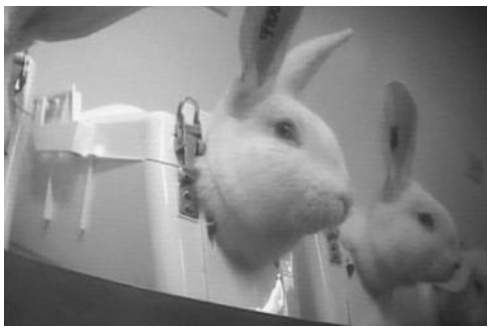

मगर ये सारे लक्षण परोक्ष रूप से ही बताते हैं कि क्या उस जंतु को प्रयोग के दौरान दर्द हुआ था। इस समस्या से निपटने के लिए कनाडा के मेकगिल विश्वविद्यालय के जेफ्री मोगिल ने 2010 में एक पैमाना विकसित किया था जिसे 'माउस ग्रिमेस पैमाना' कहते हैं। इसमें चूहे के चेहरे के पांच लक्षणों पर ध्यान दिया जाता है। जैसे आंखों का सिकुड़ना और गालों का फूलना। प्रत्येक लक्षण को शून्य (जब वैसा नहीं होता) और दो (जब स्पष्ट रूप से वह लक्षण नज़र आता है) अंक दिए जाते हैं।

उक्त पैमाना जंतु पर काम करने वाले वैज्ञानिकों के बीच जल्दी ही बहुत लोकप्रिय हो गया। अब इसी तरह का काम खरगोशों पर किया गया है। न्यूकासल विश्वविद्यालय के मैथ्यू लीच कई जंतुओं के चेहरों के हाव-भाव पर काम करते रहे हैं। वे मानते हैं कि यदि आप जंतुओं के दर्द को कम करना चाहते हैं, तो पहले उसे पहचानना सीखिए। माउस ग्रिमेस पैमाने को आगे बढ़ते हुए उन्होंने एक रैबिट ग्रिमेस पैमाना विकसित किया है।

इस पैमाने का विचार स्वीडन सरकार की ओर से आया था। सरकार यह परखना चाहती थी कि जब खरगोशों की पहचान के लिए उनके कान पर टेटू गोदा जाता है, तो क्या उन्हें दर्द होता है। कान पर टेटू गोदना जंतुओं की पहचान का एक आम तरीका है।

खरगोश ग्रिमेस पैमाना लगभग उन्हीं लक्षणों पर आधारित है जो चूहों के लिए उपयोग किए गए थे - मूंछों की हरकत, कान की पोज़ीशन, गालों का फूलना, नथुने फैलना, और आंख का सिकुड़ना। चूंकि कान पर टेटू गोदते समय कानों की पोज़ीशन देखना संभव नहीं था, इसलिए इस पैमाने पर अधिकतम स्कोर 8 हो सकता था।

बगैर निश्चेतक के टेटू गोदने पर खरगोशों का स्कोर औसतन 4 रहा। जब यही मापन उपचार से पहले, उपचार का नाटक करते हुए और निश्चेतक का उपयोग करके किया गया तो औसत स्कोर 2 से कम रहा। लीच के मुताबिक स्कोर में 2 का यह अंतर महत्त्वपूर्ण है।

कई वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं कि ग्रिमेस पैमाने से काफी फर्क पड़ा है। अब लीच व उनके साथी मेकाक बंदरों, भेड़ों, घोड़ों और सुअरों जैसे अन्य जंतुओं के लिए ऐसा पैमाना विकसित करने की योजना बना रहे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***